International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 3, March- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018 |**Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015**

गाजियाबाद जनपद के लोकगीत

डॉ0 दीपक कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग
एस0एस0वी0 कॉलेज, हापुड़

शोधार्थी – कीर्ति चौधरी
इतिहास विभाग
एस0एस0वी0 कॉलेज, हापुड

लोकगीत शब्द 'लोक' तथा 'गीत' दो शब्दों से निर्मित हुआ है। लोक से तात्पर्य शहरों तथा गाँवों में निवास करने वाले उस जन–समुदाय से है जिसके व्यवहारिक ज्ञान का आधार पोथियां नहीं है। [1] इसी जन–समुदाय की भावनाएं तथा हृदय का भाव विलास जब भाषा बद्ध होकर आरोह–अवरोह में कंठ से प्रभावित होने लगता है। तो लोक बन जाता है। लोक गीत जीवन की कड़वी मीठी अनुभूतियों के सच्चे प्रतिनिधि है जिनका निर्माण व्यक्ति के जीवन जीने के क्षणों में होता है जीवन की सहज क्रियाओं और व्यापारों में लीन जन–समूदाय के निश्छल, सरल और स्वाभाविक भाव गीतों के बोल बनकर उनके कंठ स्वर में तैरने लगते है। खेत,नदी,पहाड़,घर और मैदान सभी इनके निर्माण स्थल है। हल चलाते हुए, पशु चराते हुए , चक्की पीसते हुए, अर्थात सामान्य कार्य व्यापार के समय इन गीतों का उदय हुआ है।[2]

मनुष्य ने संसार में आकर जो सुख दुखः भोगे है। वह सब लोकगीतों के माध्यम से प्रकट होते है। इन सबके साथ–साथ लोकगीतों के माध्यम से शदियों पुराना इतिहास भी प्रकट होता है। ऐतिहासिक दृष्टि से भी लोकगीत अपना विशेष महत्व रखते है। इसलिए लोकगीतों का सग्रंह और अध्ययन उतना ही आवश्यक है जितना कि साहित्य का है। साहित्य लिखित होने के कारण होने के कारण सुरक्षित रहता है। परन्तु लोकगीत तो केवल मनुष्य के कंठ और हदय में निवास करते है। अतः इसका संग्रह एवं अध्ययन अति आवश्यक हो जाता है।

गाजियाबाद जनपद उत्तर प्रदेश का एक महत्वपुर्ण जनपद है जो देश कि राजधानी दिल्ली से उत्तर प्रदेश का परवेश द्वार माना जाता है। मुगल शासक अहमद शाह आलमगीर द्वितिय के वजिर गाजीउदीन ने 1740 में गाजीउदीननगर कि स्थापना कि और आगे चलकर यही गाजीयउदिननगर गाजियाबाद के नाम से जाना जाने लगा। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व यह मेरठ जनपद की एक प्रमुख तहसील था। 14 नवम्बर 1976 को प्रशासनीक दृष्टि से गाजियाबाद को जनपद का दर्जा प्राप्त हुआ। [3]

गाजियाबाद जनपद भारत की सांस्कृतिक और पुरातात्विक विरासत के रूप में एक महत्वपूर्ण जनपद है। इस जनपद के वासी विभिन संस्कारों एवं अवसरों पर गीत गाकर एवं नृत्य करके अपना हर्ष प्रकट करते है।[4] यहाँ के लोग गीतों के माध्यम से लोकजीवन कि जानकारी उपलब्ध होती है। हमारी भारतीय संस्कृति मे लोकगीतों और संगीत का अटुट

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 3, March- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018 |**Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015**

सम्बन्ध है। लोकगीतों में सामूहिक चेतना की पूकार होती है। इनके माध्यम से मूल संस्कृति तथा जनजीवन का पुर्ण चित्रण प्राप्त होता है। जनजीवन के सभी पक्षों के दर्शन होते है। जीवन की प्रत्येक अवस्था जन्म से लेकर मृत्युपरांत लोकगीत समयानुकूल भावनाओं को अभिव्यक्ति देते है। ये समाज कि जीवन शैली को प्रतिबिम्बित करते है। जिनका विवरण कुछ इस प्रकार है।

सनातन धर्म में प्राचीन काल से यह परमपरा चली आ रही है। प्रायः ऐसी मान्यता है कि श्रवण मास में देवता सो जाते है। और विवाह के शुभ अवसर पर वो उपस्थित नहीं होते जिस कारण वर वधु को उनका आर्शीवाद प्राप्त नहीं हो पाता इसलिए कार्तिक शुक्ल एकादशी को चार मास का शयन समाप्त कर भगवान विष्णु क्षीर सागर से उठते है उनके साथ ही समस्त देवता गण भी जागृत हो जाते है। अतएव इसे देवउठान एकादशी कहते है।

धार्मिक पक्ष के अतिरिक्त इस त्यौहार का लौकिक महत्व भी है। इस दिन संध्या समय देव उठाने का अनुष्ठान किया जाता है। इस अनुष्ठान के अंतर्गत घर के भीतरी द्वार पर खडीया से पोतकर उसके ऊपर देवता का चित्र बनाया जाता है। और उसी के नीचे पशुओं के खुर और घर के सदस्यों के पैरों के चिन्ह बनाये जाते है। देवता के चित्र के नीचे लीपकर उस स्थान पर दीपक रखा जाता है। दीपक के उपर टौकरी रखकर उसे हाथ से थपथपाते हुए घर की समस्त स्त्रियां एवं कन्यांए गीत गाकर देवों को जागृत करती है। देव उठाने के पश्चात् देवता को शकरगन्दी , सीगांडे और दुध के जवे का भोग लगाकर समस्त महिलाएं प्रसाद के रूप मे आपस मे बाट लेती है।

जिसके पश्चात विवाह जैसे शुभ कार्य प्रारम्भ होते है। सनातन धर्म में श्रवण मास से लेकर कार्तिक मास कि एकादशी से पुर्व शुभ विवाह पुर्णतः वर्जित माने जाते है। यदि इस बीच विवाह कर भी लिया जाये तो प्रायः वह सफल नहीं हो पाते।

देव उठान परमपरा से सम्बन्धित कार्तिक मास की एकादशी को जनपद गाजियाबाद में गाए जाने वाला लोकगीत कुछ इस प्रकार है। ––

उठ नराण बैठ नराण

चाकी चुल्हे बैठ नराण

मे काटु तु छेत नराण

चार पाई घी चपोई

आप्पे खाई क्या होई

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 3, March- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018 |**Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015**

बामन दिये बुढी गाय
रपट पडी बामन के भार
देव उठो रे कातक के मास
कास फुलो रे होली के मास । [5]

देव उठान का चित्र

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 3, March- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018 |**Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015**

ऋतु सम्बन्धी गीत

व्रतों एवं त्यौहारों के अवसरों पर गाए जाने वाले लोकगीतों के अतिरिक्त गीतों का एक विशाल भण्डार हमें ऋतु सम्बन्धी लोकगीतों के रूप में भी उपलब्ध होता है। वसन्त की मदमस्त हवा और सावन की शीतल फुहार लोक–मनस को उल्लासीत व प्रफुल्लित कर देती है। और वह वातावरण की मस्ती में स्वर से स्वर मिलाने लगता है। ऋतु सम्बन्धी गीत प्रायः उन्हीं ऋतुओं में गाए जाते है। जिनमें वातावरण उपयुक्त होता है। गाजियाबाद जनपद में सावन तथा फाल्गुन का मौसम सुहाना होता है। अतः ऋतु सम्बन्धी गीतों के लिए ये दोनों महा उपयुक्त है।

सावन के गीत–– श्रवण मास वास्तव में गीतों का मास है।[6] सावन आने तक वर्षा हो चुकी होती है। लू से झुलसी पृथ्वी पर हरियाली का साम्राज्य छा जाता है। इस वातावरण में न केवल मोर पपीहा और कोयल वरण कीट पतंगे भी संगीत लहरी छोड़ देते है। तो भला फिर मानव मन कैसे शान्त रह सकता है। इन गीतो में प्रेम संयोग तथा वियोग श्रृंगार ससुराल के कष्ट , सहेलीयों की चुहलबाजी व पारिवारिक गीत आदि गाए जाते है।

श्रवण माह मे तीज से छः सात दिन पूर्व ही गांवो मे महिलाएँ पेडों की डालीयों पर झुला डाल लेती है और तीज वाले दिन तो आस–पास की महिलाएँ वहां एकत्रित हो जाती है। और शायं के समय गीत गाती है। झुला झुलती है और हास्य–विनोद होता है।

कच्चे नीम की निबोडी सावन जल्दी आईयो रे

बाबा दूर मत दियो अम्मा नहीं बुलावेगी

कच्चे नीम की नीबोडी सावन जल्दी आईयो रे.....[7]

कर सौलह श्रृंगार करके जाऊंगी बागो में

आयेगी बहार सखी अबके सावन में

झुलुंगी झुला उमंग भरे मन में

गहने सजाऊंगी अपने तन पे

निहारेंगे सईयां सखी सावन में

झुलुंगी अबके बरस उनके संग में .....[8]

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 3, March- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018 |**Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015**

फाल्गुन के गीत ——ऋतु गीतों के क्रमः में सावन के पश्चात फाल्गुन के गीतों का महत्वपुर्ण स्थान है जिस प्रकार भयंकर गर्मी और तपती लु के पश्चात सावन शीतल फुहारे और हरीयाली लेकर आता है। उसी प्रकार कडाके की सर्दी के पश्चात फाल्गुन भी मन भावन वसन्ती के हवा के साथ आता है। सावन की भाती वसन्तागमन पर भी प्रकृति का उल्लास दर्शनीय होता है। होली गाने तथा बजाने का कार्यक्रम वसन्त पंचमी माघ 'शुक्ल' से प्रारंभ हो जाता है। गांव के किसी बड़े से चौक पर बड़े बड़े ढोल तथा बड़े बड़े टाल(घण्टे) बजाय जाते है। बीच बीच में वाघ रोककर होली गाई जाती है महिलाएँ भी किसी चबूतरे पर एकत्रित होकर होली से तीन–चार दिन पूर्व ही अपना मनोरंजन करती है। गीत गाकर और नृत्य करके छोटे–छोटे संवादो वाले नाटकों का आयोजन करती है। उदाहरणार्थ होली के अवसर पर वसन्त ऋतु में होली शीर्षक से जो लोकगीत गाये जाते है वो देहाती तथा ग्रामीण इलाके से लेकर नगरीय स्थानों पर भी प्रचलीत है जिसकी कुछ झलक निम्नवत् है।

सखी फागुन आया रंग बरसे गुलाल बरसे
भर पिचकारी मेरे माथे पर मारी टीका होगया लाल
होली कैसे खेलु सावंरीया तेरे संग .....[9]

काशी के नरनार मना रहे होली का त्यौहार महीना फाल्गुन का
तारावती यु कहने लगी बेटा रोहित से जा बेटा तु फुल तोड़ ला
अपनी ही बगिया में से इतने बोल सुने माँ के हो लिया बागों की
राही महीना फाल्गुन का फुलो जैसी रोशन मे बेटा रोहित झुम रहा
उसी पेड़ की डाली पर काला विशियर डोल रहा महिना फाल्गुन का [10]

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 3, March- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018 |**Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015**

अहोई के गीत —— अहोई के व्रत का भी गाजियाबाद जनपद में विशेष महत्व है। इस दिन माताएं व्रत रखती है, पूजा के स्थान पर लीप पौत कर अहोई माता का चीत्र बनाती है और पूजन करती है। मिटटी के दो करवे रखकर एक में जल और दुसरे मे गेहुँ रखती है और कलावे मे अहाई माता की चांदी की तसवीर सयाव बछड़े पहना कर करवे में डालती है। इस व्रत के अंर्तगत संध्या समय भोजन आदि से निवृत होने पश्चात स्त्रीयां आंगन मे रखी जेहड़ के पास बैठकर गीत गाती है। इन गीतों का वर्णन वर्ण्य विशय देवी की प्रशंसा तथा उसके कोप से बचाव करना होता है।

अहोई मईया गर्ज रही तुझे केसे मनाउं मे

तेरे तो संग चलत मोहे प्यास लगे री मईया

तेरा तो निर्मल पानी संग चले रे मईया

अहोई मईया गर्ज रही तुझे केसे मनाउं मे [11]

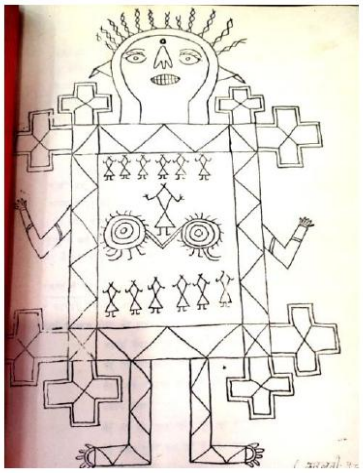

विवाह के शुभ अवसर पर विभिन्न प्रकार के लोकगीत गाये जाने कि परमपरा है जो अति प्राचीन काल से चली आ रही है। लड़के व लड़की के विवाह के अवसर पर अलग अलग प्रकार गीत गाकर व नृत्य करके मनोरजंन किया जाता है। कन्या पक्ष की ओर से विवाह के अवसर पर गाये जाने वाले कुछ लोकगीतों का विवरण इस प्रकार है। ——

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 3, March- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018 |**Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015**

रोती रोती लाड़ो मेरी यही कह रही
मोटी–मोटी आँखियो मे आसु ले रही
बाबा जी मेरी सादी ना करो सादी
ना करो बरबादी ना करो उल्फत मे
जान फस जायेगी मेरी ऐसे क्या लाडली
कवारी रहोगी दुनीया मारे ताने बैठी रोया करोगी [12]

कमरे मे क्यू बैठी लाडो अंगने मे पुकार है
दरवाजे पर बाजा बज रहा अजब बहार है
फुलो ही का टिका तेरा फुलो ही कि बिन्दी तेरी
फुलो ही का लाडो तेरे माथे का श्रृंगार है [13]

वर पक्ष की ओर से गाए जाने वाले गीत —विवाह कार्यक्रम के अनर्तगत वर पक्ष की ओर से अनेक लोकगीत गाए जाते है। इन गीतों के माध्यम से वर पक्ष की भावनाओं को सहज अभिव्यक्ति मिलती है। वर पक्ष के गीतो का आयोजन सगाई के साथ ही हो जाता है। सगाई के अवसर पर वर पक्ष को प्रशंता होती है की उनका पुत्र सगाई के लिए चुना गया वर पक्ष चाहता है। कि इसके लिए कन्या पक्ष आभारी हो। गीतों के माध्यम से महिलाएं वर पक्ष की श्रेष्ठता बताती है।

बन्ना खेले गलियो मे उडावे पतंग
तेरे बाबा बुलावे चलो लाड़ले
तुम्हे बरनी दिलाये करो ना पसन्द
तुमने बरनी का फोटो खिचाया नही
मेरे कमरे में भी तो लगाया नहीं
बीना देखे बताओ करू क्या पसन्द

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 3, March- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018 |**Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015**

ज्यादा कहने मे मुझको आती है शर्म
बन्ना खेले गलियो में उड़ावे पतंग
तेरे पापा बुलाये चलो लाड़ले
तुम्हे बरनी दिलाये करो ना पसन्द
तुमने बरनी का फोटो खिचाया नही
मेरे कमरे में भी तो लगाया नहीं
बिना देखे बताओं करू क्या पसन्द
ज्यादा कहने मे मुझको आती शर्म
बन्ना खेले गलियो मे उड़ावे पतंग [14]

बन्ने बन्नी को सजालो अपनी मन मानी
ससुर लडे चाहे सास रानी
बन्ने जाना बजार लाना साडी पल्लेदार
बेलबुटो की बहार रंग आसमानी
बन्ने बन्नी को सजा लो अपनी मन मानी
ससुर लड़े चाहे सास रानी
बन्ने जाना बजार लाना चुड़ी मिन्नेदार
क्रिम पोडर की बहार गेल श्रृंगार दानी
बन्ने बन्नी को सजालो अपनी मन मानी
ससुर लड़े चाहे सास रानी
बन्ने जाना बजार लाना पलंग मसेहरीदार
चौसठ तकिये कि बहार संग मच्छरदानी

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 3, March- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018 |**Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015**

बन्ने बन्नी को सजा लो अपनी मन मानी

ससुर लडो चाहे सास रानी [15]

कुछ लोकगीतो के माध्यम से हमारा इतिहास श्रुति परम्परा के रूप में चला आ रहा है। जिसके माध्यम से हमे रामायण महाभारत राजा हरिश्चन्द्र आदि का इतिहास इन लोकगीतो के द्वारा जनमानस अपने भीतर संजोय हुए है। जिसके कुछ पंक्तिया नीम्नवत् है।

मेरी आसवन भीगे साड़ी

आ जाओ कृष्ण मुरारी

क्या भूल गए बनवारी

जब ऊगँली कटी तुम्हारी

मैनें फाड़ी रेशमी साडी

आ जाओ कृष्ण मुरारी

वहाँ बैठे पिता भीष्म

वहाँ बैठे द्रोणाचारी

दुशाशन खीचे साड़ी

आ जाओ कृष्ण मुरारी

महलो की रानी कुन्ती

महलो की रानी सुभद्रा

वन फीरती मारी मारी

आ जाओ कृष्ण मुरारी [16]

लेकर कर्ण कुन्ती चली गंगा मे बहाने को

गोदी में ले लाला चली जग से मिटाने को

कालजे के टुकड़े को रो रो के बहाया है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 3, March- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018 |**Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015**

एक सुत पुत्र ने उसे जल से निकाला है।
पालन पोषण करके उसे पढ़ाया लिखाया है।
कौरवो कि सेना मे उसने हाथ बढाया है।
बड़े बड़े योद्धाओ को उसने मार गिराया है।
लेके कर्ण कुन्ती चली गंगा मे बहाने को । [17]

कुछ इस प्रकार के लोकगीत भी गाये जाते है। जिनके माध्यम से इहलौक ओर परलोक के भय से मनुष्य को सदकर्मों की प्रेरणा प्राप्त होंती है ताकि वह व्यक्ति अच्छे–बुरे कर्मो के बीच का अन्तर जान सके ओर दुष्कर्मो को करने से बच सके अपने जीवन को सही दिशा ओर मार्गदर्शन दे ताकि समाज का इस्तर भी सुधार सके ये लोकगीत कही ना कही समाज को एक सही दिशा देने का कार्य भी अपने माध्यम से करते है।

इस पल मे नहीं मिले तो उस पल में मिलता है
अपने अपने कर्मो का फल सबको मिलता है
एक पत्थर वो है जो मन्दिर मे लगता है
एक पत्थर वो है जो सड़को पर लगता है
दोनो का मालिक एक है बस अन्तर इतना है
अपने अपने कर्मो का फल सबको मिलता है [18]
एक बेटा वो है जो सेवा करता है
एक बेटा वो है जो अवारा फिरता है।
दोनो कि मईया एक बस अन्तर इतना है
अपने अपने कर्मो का फल सबको मिलता है
एक फूल वो है जो मन्दिर मे चढ़ता है

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 3, March- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018 |**Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015**

एक फूल वो है जो अर्थी पर लगता है
दोनो कि डाली एक है बस अन्तर इतना है
अपने अपने कर्मो का फल सबको मिलता है। [19]

दीन बंधु दयालु दया कीजिए
वरना दुनिया से हमको उठा लिजिए
मेरे मालिक मुझे तु गरीबी ना दे
मौत दे दे मगर बदनसीबी ना दे
बदनसीबी से हमको बचा लिजिए
वरना दुनिया से हमको उठा लिजिए
प्रभु तुमने बुलाया चले आये हम
तेरी दुनिया मे आकर पछताये हम
हो गयी भूल हमसे छमा किजिए
वरना दुनिया से हमको उठा लिजिए
मेरी नईया पुरानी भवर मे पड़ी
बीच सागर मे आकर लहरा गयी
पार कर ना सको तो डुबो दिजिये
वरना दुनिया से हमको उठा लिजिए [20]

पुरातन काल से विवाह के शुभ अवसर पर कन्या को उपहार देने की परम्परा चली आ रही थी लेकिन समय के साथ–साथ उसने परिवर्तन आता गया और उन उपहारों का स्थान दहेज प्रथा ने ग्रहण कर लिया जो समाज में व्याप्त काफी समय से चली आ रही दहेज परमपरा को लेकर भी विभिन्न प्रकार के लोकगीत भी यहा गाये जाते है। जिनके माध्यम से इसके स्वरूप और जानमानस के मानसिक स्थिति में बदलाव के विषय में भी जानकारी प्राप्त होती है। जिसके कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 3, March- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018 |**Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015**

मेरे बाबूल ने मेरे बारे में सारी दुनिया टोही हो
मेरी अम्मा ने मेरे बारे में रो रो अखियाँ खोई हो
घर मिल जा तो बरना ना मिलता माड़ा मेरा नसीब हो
नशे बाज में नशा घणा नशे बाज के ब्याही हो
नशे बाज ने मांगा जहाज हवाई हो
मेरे बाबूल ने घर भी बेचा बगीचा भी बेचा
दे दिया जहाज हवाई हो
बैठ जहाज मे पिया के साथ मे
घर सासुल के आई हो
सास नन्द मेरी दोरानी जीठानी मुझे तारन को आई हो
जहाजो मे से जब उतरूंगी देदे घर की चाबी हो
बारह साल बड़ी बहु को हो गए मांगी ना घर की चाबी हो
मेरे बाबूल के आठ जमाई मांगा ना जहाज हवाई हो
बैठ जहाज मे पिया के साथ मे घर बाबूल के आई हो
ताई चाची मेरी संग की सहेली आपस मे बतलाई हो
कल तो छोरी तु बिदा हुई थी वापस कैसे आई हो
मेरे बाबूल पे कर्ज घणा से उसे तारन को आई हो [21]

काली तेरी छोरी है मलुक मेरा छोरा है
सिक्के पर ले लूंगा सारी रकम खाऊ छोरे की कसम
ट्रेक्टर हवेली ओर लडका एम0ए0 पास है
इण्टरव्यु दे रहा सर्विस कि पुरी आस है

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 3, March- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018 |**Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015**

कुर्सी पर बैठा चलाये कलम खाऊ छोरे की कसम
लड़के की सगाई कि तो दिल्ली वाले कह गये
लड़की सुसील है दहेज ज्यादा दे रहे
तेरे लिये तो मेरे दिल मे रहम खाऊ छोरे की कसम
बराती की व्यवस्था करना बडे ठाट वाट से
सोने की व्यवस्था करना बिस्तर ओर खाट से
जनमासे से बाहर ले लू नासता गर्म खाऊ छोरे की कसम। [22]

तकदीर बनाने वाले ने कैसी तकदीर बनाई है
मेरी अम्मा पुछे रो रो के बेटी क्या दुख पाया तमने
सासु के अम्मा से भी ना बता सकी कदी आँख फोड़ ले
रो रो के तकदीर बनाने वाले ने भी क्या तकदीर बनाई है
मेरी बाबूल पूछे रो रो के बेटी क्या दुख पाया तुमने सासुल के
बाबुल से भी ना बता सकी कदी भेजे ना मुझे पिहर से
मेरा भईया पुछे रो रो कर बहना क्या दुख पाया तुमने सासुल के
भईया से भी ना बता सकी कदी हाथ छोड़ दे जीजा पे
मेरी भाभी पुछे रो रो के नन्दी क्या दुख पाया तुमने सासुल के
भाभी से भी ना बता सकी कदी ताने मारे लड़ लड़ के
तकदीर बनाने वाले ने केसी तकदीर बनायी है। [23]

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 3, March- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018 |**Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015**

शिशु से सम्बन्धी गीत —— उपर्युक्त गीतों में जच्चा–बच्चा ,परिवारजनों ,देवर ,नन्द के नेग सम्बन्धी गीतों का वर्णन किया जाता है। गाजियाबाद जनपद मे ऐसे लोकगीत प्रचलित है। जो नवजात शीशु के जन्म के अवसर पर परिवारजनो के मनोभावों का चित्रण प्रस्तुत करते है।

बाहर खड़े है बढईया पालना लेलो यशोदा मईया

दादी जी ने मोल किया दादा जी ने दाम दीये

झूला झूले कृष्ण कन्हैया पालना लेलो यशोदा मईया .....[24]

टुट रहा छप्पर टपक रहा पानी जच्चा के सोने की बडी परेशानी

दाई आवे ललन जनावे मांगे अपना नेग

नेगो के बदले उलछरहा पानी

जच्चा के सोने की बढी परेशानी

सासु आवे चर्वे चडावे मांगे अपना नेग

नेगो के बदले उलछ रहा पानी

जच्चा के सोने की बडी परेशानी

देवर आवे बाहर नीकाले मांगे अपना नेग

नेगो के बदले कुलछ रहा पानी

नन्दी आवे दुधी धुलावे मांगे अपना नेग

नेगों के बदले उलछ रहा पानी ———— [25]

अच्छी घडी शुभ घडी उस दिन जानुंगी

जिस दिन लाल मेरा बाबा कहकर बोलेगा

बाबा कहकर बोलेगा दादी की गोदी खेलेगा

पेरों मे पायलीया पहने छम–छम डोलेगा ————[26]

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 3, March- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018 |**Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015**

भात से सम्बन्धीत गीत ——सनातन धर्म में प्रायः ऐसी मान्यता है, कि श्रीकृष्ण

जी द्वारा सरसागढ़ में नरसी जी का भात भरे जाने के पश्चात यह परम्परा तभी से चली आ रही है। की विवाह से पूर्व बहने भाई के यहां भात न्योतने जाती है। तत्पश्चात भाई विवाह वाले दिन बहन के यहा भात लेकर जाते है। जिससे सम्बन्धीत लोकगीत जो गाजियाबाद जनपद मे प्रचलीत है। उनमे से कुछ इस प्रकार है ——

मेरी लिपी पड़ी चोपाड़ सवेरे आ जाइयो भातईयां

टीका टीका क्या करे भातईया मेरे घर के आगे सुनार

सवेरे आ जाइयों———

कपड़ा कपड़ा क्या करे भातईयां

मेरे घर के आगे बाजार

सवेरे आ जाइयों ——— [27]

मैं तो खड़ी मुंडेरी की ओट, सास मेरी ताने मारे री

अरी बहु बड़े घरो की बेटी ,भात थारे अब तक ना आया री

अरी बाबुल हो गए बुढ़े, मात का चलती काई ना री

अरी मेरा बीर मुकदमेदार, आज की पेसी कईये री

अरी मेरी भाभी बड़ी चकचोर, भतीजे भेजे को ना री

मैं खड़ी मुडेरी की ओट, अरी जैठानी मेरी ताने मारे री

छोटी बड़े घरो की बेटी, भात थारो अब तक ना आया री [28]

बहनो सुनो नर्सी के भात की चर्चा ।

जब नर्सी बागो मे आए माली मालन सब घबराए ।

अरी जन कैसो भरेंगे भात नर्सी के भात की चर्चा।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 3, March- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018 |**Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015**

जब नर्सी तालो पर आए धोबी धोबन सब घबराये ।

अरी जन कैसे भरेंगे भात नर्सी के भात की चर्चा।

बहनो सुनो ध्यान लगाये नर्सी के भात की चर्चा [29]

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 3, March- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018 |**Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015**

सन्दर्भ सूची

1 डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी – हिन्दी साहित्य की भुमिका, प्रकाशक– हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बाई।

2 डॉ0 विद्या चौहान – लोकगीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभुमि , हिन्दी विभाग जुहारी देवी कन्या डिग्री कॉलज कानपुर प्रगति प्रकाशन आगरा 3।

3 भारतीय गजेटियर , उत्तर प्रदेश जिला गाजियाबाद 1999 पेज न0 1।

4 वही

5 साक्षात्कार श्रीमति कमलेश देवी, पति श्री नरेन्द्र सिंह वर्ष उम्र – 62 निवासी ग्राम नुरपूर मुरादनागर गाजियाबाद।

6 डा0 कृष्ण देव उपाध्याय – लोक संस्कृति की रूपरेखा, लोकभारती प्रकाशन, प्रकाशित वर्ष 2009 ।

7 साक्षात्कार श्रीमती उर्मीला देवी, पति श्री प्रहलाद सिंह उम्र 75 वर्ष मकान न0 76 ए0 सहकारी नगर गाजियाबाद।

8 साक्षात्कार श्रीमती सुरेखा देवी पति देवेन्द्र सिंह उम्र 65 वर्ष मकान न0 एस0 एच0 11 बलोक शास्त्री नगर गाजियाबाद।

9 वही ।

10 साक्षात्कार श्रीमती नीतू देवी, पति श्री राजेन्द्र सिंह उम्र– 40 हाउस न0 14 शास्त्रीनगर गाजियाबाद।

11 साक्षात्कार श्रीमती सुनीता देवी, पति श्री मनवीर सिंह उम्र 42 वर्ष निवास स्थान ग्राम नूरपुर, मुरादनगर, गाजियाबाद।

12 साक्षात्कार श्रीमती चन्द्रकान्ता देवी, पति श्री रविन्द्र कुमार उम्र– 55 वर्ष निवास स्थान ग्राम नुरपूर मुरादनगर गाजियाबाद।

13 वही।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 3, March- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018 |**Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015**

14 साक्षात्कार श्रीमती ओमवती देवी, पति श्री स्व0 कालीचरण सिहं उम्र 65 वर्ष निवास स्थान ग्राम नुरपूर मुरादनगर गाजियाबाद।

15 वही ।

16 साक्षात्कार श्रीमति गीता देवी, पति श्री धीरेन्द्र कुमार उम्र– 50 वर्ष निवास स्थान ग्राम नुरपूर मुरादनगर गाजियाबाद ।

17 वही ।

18 साक्षात्कार श्रीमति मुनेश देवी, पति श्री जगपाल उम्र– 60 वर्ष निवास स्थान ग्राम नुरपूर मुरादनगर गाजियाबाद ।

19 वही ।

20 साक्षात्कार श्रीमती देवकी देवी, पति श्री विजेन्द्र सिहं उम्र–80 वर्ष निवास स्थान ग्राम अबुपुर मुरादनगर गाजियाबाद ।

21 साक्षात्कार श्रीमती मालती देवी, पति श्री जोगेन्द्र सिंह उम्र–40 वर्ष निवास स्थान ग्राम जलालाबाद मुरादनगर गाजियाबाद।

22 वही ।

23 साक्षात्कार श्रीमती अन्नू देवी, पति श्री अमरदीप सिंह उम्र – 38 वर्ष निवास स्थान ग्राम जलालाबाद मुरादनगर गाजियाबाद।

24 वही ।

25 साक्षात्कार श्रीमती राजकली देवी, पति स्व0 श्री बेगराज सिंह उम्र– 85 वर्ष निवास स्थान ग्राम नुरपूर मुरादनगर गाजियाबाद ।

26 वही।

27 साक्षात्कार श्रीमति चन्द्रमुखी देवी, पति श्री राजमल उम्र – 51 वर्ष निवास स्थान ग्राम नुरपूर मुरादनगर गाजियाबाद।

28 साक्षात्कार श्रीमती राजबाला, पति श्री महेन्द्र सिंह उम्र– 85 वर्ष निवास स्थान ग्राम नुरपूर मुरदनगर गाजियाबाद।

29 वही।